



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1229-1232
www.allresearchjournal.com
Received: 17-04-2017
Accepted: 24-05-2017

Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2
Teacher, Department
Geography, School -
High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar,
India

पलामू क्षेत्र में व्यापक कोयला उत्खनन उद्योग की भौगोलिक स्थिति का विश्लेषण

Dr. Sima Kumari

सारांश-

पलामू क्षेत्र में मुख्यतः कोयला उत्पादन की औद्योगिक इकाइयों का विस्तृत अध्ययन करना अति आवश्यक है क्योंकि समय के साथ साथ यहाँ उत्खनन कार्य में तीव्रता आयी है जिससे कोयले का भण्डारण भी संभव हो सका है। इस शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा झारखंड राज्य के पलामू क्षेत्र में क्रियान्वित कोयला खदानों का वर्गीकरण कर उत्खनन उद्योगों में उनकी भूमिका का प्रतीकरण किया गया है। यह शोधकार्य समस्त शोध वैज्ञानिकों को पलामू क्षेत्र की मुख्य आद्योगिक इकाइयों के सन्दर्भ में समझ को सुगम बनाता है

मूल शब्द- उत्खनन उद्योग, पलामू क्षेत्र, कोयला भण्डारण, ओरंगा, हुटार, डाल्टेनगंज

प्रस्तावना

झारखण्ड एक प्रमुख खनिज संसाधन सम्पन्न राज्य है। अतः यहाँ के प्रमुख उद्योग खनिज उत्खनन तथा उत्पादन पर आधारित है। टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी, टाटा इंजीनियरिंग एण्ड लोकोमोटिव कंपनी, जमशेदपुर हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन, बोकारो इस्पात कारखाना, सिंदरी खाद कारखाना, हिंडालमुरी (अब हिन्डालको) आदि राज्य के प्रमुख उद्योग हैं। झारखण्ड में वृहद् एवं मध्यम श्रेणी के 309 उद्योग हैं, जिसमें कुल पूँजी निवेश 11,578.62 करोड़ रुपये है। इनमें लगभग 73,845 व्यक्ति नियोजित हैं। इस राज्य में उत्खनित किये जाने वाले खनिज पदार्थों में लौह अयस्क, कोयला, मैंगनीज, चूना पत्थर, होलोमाइट आदि प्रमुख हैं⁶ झारखण्ड क्षेत्र में अर्थव्यवस्था की रीढ़ है कोयला उत्खनन उद्योग, इसी उद्योग के विकास के कारण यहाँ का जंगली वीरान क्षेत्र भी आज आबाद हो चुका है। भारत में वाणिज्यिक कोयला उत्खनन का इतिहास लगभग 220 वर्ष पुराना है जिसकी शुरुआत दामोदर नदी के पश्चिमी तट पर स्थित रानीगंज कोलफील्ड में ईस्ट इंडिया कंपनी के मैसर्स सुमनेर और हीटली द्वारा 1774 को की गयी थी¹

अध्ययन के उद्देश्य-

इस अध्ययन में शोधार्थी ने पलामू क्षेत्र में विकसित विभिन्न उत्खनन इकाइयों की रूपरेखा का निर्धारण करते हुए उत्खनन उद्योग की सम्भावनाओं का विश्लेषण किया है

Corresponding Author:
Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2
Teacher, Department
Geography, School -
High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar,
India

इसके अंतर्गत निम्न बिन्दुओं का अध्ययन इस शोध कार्य को आधार प्रदान करता है -

- झारखण्ड राज्य के उत्खनन उद्योग में पलामू जिले के भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन करना
- पलामू क्षेत्र की उत्खनन इकाइयों का वर्गीकरण तथा कोयला उद्योगों का अध्ययन करना

अध्ययन प्रविधि

इस अध्ययन में सार्थकता की दृष्टि से प्रारंभिक आंकड़ों तथा द्वितीयक आंकड़ों के रूप में भारत सरकार, झारखण्ड सरकार तथा पलामू जिला प्रशासन के आंकड़ों के अध्ययन के द्वारा जारी डेटा एवं रिपोर्ट्स का उपयोग किया गया है। वर्तमान शोध का संबंध उत्खनन उद्योग की भौगोलिक सम्भावनाओं के अध्ययन पर आधारित है। पलामू क्षेत्र के कोयला उत्खनन इकाइयों को अध्ययन के अन्तर्गत रखा गया है। इस शोध का स्वरूप वर्णात्मक होने के साथ तुलनात्मक भी है। तथ्यों को एकत्रित करके उसके विश्लेषण करके उद्धृत तथ्यों को उजागर करना। वर्तमान शोध विवरणात्मक अवलोकन एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों के वैज्ञानिक सूत्रों तथ्यों का संकलन वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके परिणामों का प्रस्तुतीकरण है।

व्याख्यात्मक विश्लेषण -

तालिका -१ से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है की झारखण्ड राज्य कोयला उत्खनन में उड़ीसा राज्य के पश्चात दूसरा अग्रणी क्षेत्र रहा है यहाँ अनुमानित कोयले के 6,223 मिलियन टन भंडार है जो सम्पूर्ण भारत में द्वितीय उच्चतम स्तर पर है इसी क्रम में उड़ीसा राज्य के अंतर्गत अनुमानित कोयला भण्डारण 8,415 मिलियन टन है, मध्यप्रदेश (3,645), पं. बंगाल (4,990), महाराष्ट्र (2,063) तथा आन्ध्रप्रदेश (432 मिलियन टन) में भी कोयले का भंडारण होता रहा है। उत्खनन कार्य में कोयला अत्यधिक महत्व रखता है

तालिका -1 विभिन्न राज्यों में कोयले का अनुमानित संचित भण्डार (2016-17)⁷

राज्य	अनुमानित भंडार (मिलियन टन में)
झारखण्ड	6,223
उड़ीसा	8,415
मध्यप्रदेश	3,645
पं. बंगाल	4,990
महाराष्ट्र	2,063
आन्ध्रप्रदेश	432
उत्तरप्रदेश	0

पलामू क्षेत्र की उत्खनन इकाइयों का वर्गीकरण तथा कोयला उद्योगों का अध्ययन-

पलामू क्षेत्र में मुख्यतः कोयला उत्पादन की उत्खनन आद्योगिक इकाइयों का विस्तृत अध्ययन करना अति आवश्यक है क्योंकि झारखण्ड राज्य के आलावा देश विदेश में कोयले की आपूर्ति का स्रोत यही उत्खनन इकाइयां है। शोधार्थी ने पलामू जिले के दक्षिण पूर्वी भाग में विस्तृत कोयला क्षेत्रों के उत्पादन तथा भण्डारण में इन इकाइयों की भूमिका का तथ्यात्मक अध्ययन निम्न प्रकार किया है -

औरंगा कोयला क्षेत्र -

औरंगा कोयला क्षेत्र का विस्तार 135 से 161 वर्गकिलोमीटर तक है। एक अनुमान के मुताबिक यहाँ 207 करोड़ टन कोयला भंडारित अवस्था में है जिसमें से वर्तमान में यहाँ 140 करोड़ टन प्रमाणित निम्न कोटि वाले कोयले के भंडार है। यहाँ कोयला क्षेत्र औरंगा की घाटी में 97 वर्ग मील तक फैला है जिसकी अनुमानित कीमत 2 करोड़ टन आंकी जा सकती है। अक्षांश 23°42' से 23°52' और देशांतर 84°17' से 84°27' देशांतर के मध्य इस जिले के अन्य दो पड़ोसी कोयला क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में डालटनगंज कोलफील्ड और दक्षिण-पश्चिम में हुटर क्षेत्र हैं सामूहिक रूप से कोयला घाटी क्षेत्र रूप में जाना जाता है ²

हुटार कोयला क्षेत्र -

हुटार कोयला क्षेत्र अक्षांश, 23 °44 'से 23°52' और देशांतर, 83°53 'से 84 °11' कोएल घाटी के साथ पूर्व-पश्चिम ट्रेडिंग गॉडवाना बेल्ट में स्थित है।

हुटार कोयला क्षेत्र का विस्तार 207 वर्ग कि मी तक है। अनुमानित कोयले के भण्डारण का 9 करोड़ टन प्रमाणीत अवस्था में है। हुटार कोयला क्षेत्र को संरचनाओं के आधार पर तालचिर, करहरबरी और बराकर संरचनाओं में विभाजित किया जाता रह है।³

पलामू के प्रथम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के मुताबिक " हुटार कोयला क्षेत्र 79 वर्ग मील में विस्तृत है जो डालटेनगंज के दक्षिण तथा औरंगा नदी के पच्छिम में विस्तृत हैं जो दक्षिण से उत्तर प्रवाहित कोयल नदी द्वारा पार की जाती है।

इस की गुणवत्ता के सम्बन्ध में मिस्टर बौल का कहना है कि "The Coal measure rocks of this area present many striking differences from those of the Auranga field. To this rule the coal is no exception, as will at once be apparent by a comparison of assays. From Daltonganj coal that of Hutar differs in containing a notably smaller proportion (7.15 percent) of fixed carbon, and would, therefore, have a less heating power. The proportion of ash, 10.7 percent is the same in both. On the whole, however, the Hutar coal is quite equal to the average of Indian coals, so far as regards quality. Much uncertainty must attach to any estimate of quantity"^[4].

डाल्टेनगंज कोयला क्षेत्र -

पलामू का प्रशासनिक मुख्यालय डाल्टेनगंज (मेदिनीनगर) कोइल नदी के तट पर 24°3 'उत्तर और 84°4' पूर्व के बीच स्थित है। डाल्टेनगंज कोयल क्षेत्र 135 से 322 वर्ग किमी में स्थित है इसका कुल क्षेत्रफल 200 वर्गकिमी अनुमानित है। यह कोयले की बराकर श्रेणी की 600 मीटर गहराई वाली परतो का क्षेत्र है ।

कांप मिट्टी के फैलाव के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र का सही अनुमान लगा पाना मुश्किल है।

इस कोयला क्षेत्र का पूर्वी सीमा लोहसी गाँव के निकट है जो हजारीबाग जिला के बाद तुरंत पलामू जिले की सीमा के अन्तर्गत आता है। पश्चिमी सीमा चिरपुर के निकट है जो गढ़वा से लगभग 2 कि० मी० की दूरी पर है।

राजहरा कोयला क्षेत्र -

वर्ष 1953 में प्रारम्भ हुआ राजहरा कोयला क्षेत्र के उत्पादन में प्रति वर्ष वृद्धि हुई है।⁵

तालिका 2: राजहरा कोयला क्षेत्र में कोयला का उत्पादन: 1953-58

क्रम संख्या	वर्ष	टन में उत्पादन	वृद्धि प्रतिवर्ष
1	1953	23,467	-----
2	1954	61,446	+37,979
3	1955	84,707	+23,261
4	1956	75,429	-9,278
5	1957	86,121	+10,692
6	1958	88,206	+2,165

तालिका 2 से प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन यह दर्शाता है की राजहरा कोयला क्षेत्र में प्रति वर्ष वृद्धि दर में धनात्मक परिवर्तन हुए है। वर्ष 1953 में कोयले का उत्पादन 23467 टन रहा तत्पश्चात 1955, 1956 तक इसमें क्रमशः 37,979 टन /प्रतिवर्ष, 23261 टन /प्रतिवर्ष वृद्धि होती रही है।

वर्ष 1956 में उत्पादन दर में 9278 टन की कमी देखि जा सकती है। 1957 से 1958 तक कुल 8527 टन की वृद्धि हुई। इस क्षेत्र का कोयला अच्छी किस्म का सॉफ्ट कोक कोयला है जिसका व्यावसायिकीकरण झारखंड के अलावा भारत भर में होता है।

निष्कर्ष-

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पलामू क्षेत्र अपनी खनिज सम्पदा के कारण कोयला उत्खनन क्षेत्र में कई उद्योगों की आधारभूत संरचना का निर्धारण करता है। समय के साथ साथ यहाँ उत्खनन कार्य में तीव्रता आयी है जिससे कोयले का भण्डारण भी संभव हो सका

है। पलामू का कोयला उत्खनन क्षेत्र भौगोलिक विषमताओं के बावजूद कोयला उत्खनन कार्य में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ सूची-

1. कोयला मंत्रालय भारत सरकार की आधिकारिक वेबसाइट
2. Shukla, Manoj. Lithostratigraphy and palynostratigraphy of the Lower Gondwana formation in the Hutar Coalfield, Palamau District, Bihar. Palaeobotanist. 1983; 31(2):176-190.
3. Srivastava AK. Palaeobotanical Evidence for the Presence of Karharbari Stage in the Auranga Coalfield, Bihar: Megaflora. Palaeobotanist 2000; 49(2000):23-30
4. Chaudhury Roy PC. Bihar District Gazetteers – Palamau, (Patna, Secretariat Press), 1961, 225.
5. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पलामू जिला, 1961, पृ0 224
6. झारखण्ड राज्य की आर्थिक संरचना, शोधगंगा, पृष्ट 148
7. भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण- भारत सरकार (2016-17)